ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के संदर्भ में ऑनलाइन शिक्षा : वर्तमान और भविष्य

Online education in the context of National Education Policy-2020: Present and Future

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 20/10/2021, Date of Publication: 21/10//2021

मीना यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग,
बरेली कॉलेज,
बरेली, उत्तर प्रदेश,
भारत

सारांश

कोविड-19 महामारी ने विश्व आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित ही नहीं किया अपितु बुरी तरह तहस-नहस किया। महामारी के प्रकोप से भारत एवं संपूर्ण विश्व की शिक्षा व्यवस्था भी प्रभावित हुई और शिक्षा की एक नई व्यवस्था ऑनलाइन शिक्षा का जन्म हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन शिक्षा को शामिल किए जाने से सभी शिक्षण संस्थान छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा के संसाधन उपलब्ध कराने पर ध्यान देने लगे।

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य परंपरागत शिक्षा व्यवस्था और ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन कर भविष्य में ऑनलाइन शिक्षा के स्वरूप को बताना है

The COVID-19 pandemic has not only affected the world economic and social order, but has devastated it badly. The education system of India and the whole world was also affected by the outbreak of the epidemic and a new system of education online education was born. With the inclusion of online education in the National Education Policy 2020, all educational institutions started focusing on providing online education resources to the students.

The main objective of the present research paper is to tell the nature of online education in future by making a comparative study of the traditional education system and online education system.

मुख्य शब्दः प्राचीन शिक्षा पद्धति, आधुनिक शिक्षा पद्धति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, ऑनलाइन शिक्षा ,परंपरागत शिक्षा ,ब्लेंडेड शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस।

Ancient Education System, Modern Education System, National Education Policy 2020, Online Education, Traditional Education, Blended Education, Artificial Intelligence.

प्रस्तावना

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति मैं धीरे धीरे परिवर्तन के साथ स्कूली शिक्षा का प्रचलन हुआ । जो आजादी के लगभग 75 वर्षों तक परंपरागत शिक्षा के रूप में जारी है। कोरोना महामारी से हमारी शिक्षा व्यवस्था ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तित हुई है जो आज अत्यधिक लोकप्रिय हो रही है जिससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति मैं एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया है।शिक्षा का नवीनतम रूप है ऑनलाइन शिक्षा जिसमें इंटरनेट, मोबाइल ,कंप्यूटर या लैपटॉप आदि की सहायता से मीलों दूर बैठ कर के भी छात्र शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इसमें विद्यार्थी किसी ऐप जैसे ज़ूम, गूगल मीट स्काइप व्हाट्सएप वीडियो कॉल आज के द्वारा अपने शिक्षक से जुड़कर शिक्षा ग्रहण करता है आज छात्र विश्व के किसी सुप्रसिद्ध शिक्षा केंद्र से जुड़कर डिग्री प्राप्त कर सकता है इसका श्रेय ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को ही जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

परंपरागत शिक्षा व्यवस्था और ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन कर भविष्य में ऑनलाइन शिक्षा के स्वरूप का निर्णारण करना

साहित्यावलोकन

भारतीय समाज और शिक्षा निरंतर परिवर्तनशील रहे हैं प्राचीन काल में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से उत्कृष्ट या समुन्नति थी लेकिन समय के साथ इसमें ह्रास हुआ जो भी विदेशी आए उन्होंने यहां की शिक्षा व्यवस्था को उतना विकसित नहीं किया जितना किया जाना चाहिए। भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जानने वाले ही सरकारी कानपुर लोग समझे जाने लगे। हिंदू समुदाय अरबी और फारसी पढ़ने लगा बादशाहो की रूचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्म प्रचारकों और व्यापारियों के द्वारा डाली गई उन्होंने अनेक विद्यालय स्थापित किए गए। पाश्चात्य रीति से शिक्षित भारतीयों की आर्थिक स्थिति सुधरती देख जनता इधर झुकने लगी और अंग्रेजी विद्यालयों में अधिक संख्या में विद्यार्थी प्रवेश लेने लगे क्योंकि अंग्रेजी पढ़े भारतीयों को सरकारी पदों पर नियुक्त करने की नीति की सरकारी घोषणा की गई। 1850 तक भारत में गुरुकुल प्रथा थी परंतु मैकाले द्वारा कॉन्वेंट और पब्लिक स्कूल खोले जाने के कारण भारत में गुरुकुल बंद होना प्रारंभ हो गए।

आजादी के बाद राधा कृष्ण आयोग ,माध्यमिक शिक्षा आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ,कोठारी आयोग ,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 और नवीन शिक्षा नीति 1986,1992 आदि के द्वारा भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समय-समय पर सही दिशा देने के लिए भरसक प्रयास किए गए।

वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की जा रही है जिसमें स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बदलाव किए गए हैं । हाल ही में वैश्विक महामारी मैं वृद्धि होने के परिणाम स्वरूप ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक सिफारिशों का प्रावधान किया गया है जिससे जब कभी और जहां भी पारंपरिक और व्यक्तिगत शिक्षा प्राप्त करने का साधन उपलब्ध होना संभव नहीं है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वैकल्पिक साधनों की तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों को शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजिटल अवसंरचना, डिजिटल कंटेंट और क्षमता निर्धारण के उद्देश्य से एक समर्पित इकाई बनाई जाएगी।

अतः ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग हो गया है

अध्ययन अवधि

लगभग 18 माह

ऑनलाइन शिक्षा से हानियां

ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के अनेक लाभ हैं परंतु यह परंपरागत शिक्षा का न तो स्थान ले सकती है और न मानसिक और शारीरिक रूप से अस्वस्थ होते बच्चों के स्वास्थ्य की भरपाई। ऑनलाइन शिक्षा के अनेक दुष्परिणाम है-

1. परंपरागत शिक्षा प्रणाली की तुलना में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था छात्र को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता देती है ऐसे में प्रत्येक छात्र पर शिक्षक का ध्यान देना संभव नहीं है अतः जो छात्र रुचि के साथ अध्ययन नहीं करते वह इसमें पिछड़ जाते हैं।
2. ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में परंपरागत कक्षा की तरह शिक्षक और छात्र का संवाद स्थापित नहीं होता शिक्षक केवल अपने पाठ्यक्रमसे संबंधित कंटेंट की ही व्याख्या करते हैं, अतः कक्षा में नीरसता आना स्वाभाविक है और छात्र विषय पर पूरी तरह कंसंट्रेट नहीं हो पाते।
3. ऑनलाइन कक्षा में छात्रों को कई घंटे तक स्क्रीन के सामने बैठना पड़ता है इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के सामने अधिक समय तक बैठना स्वास्थ्य के लिए विशेष रुप से आंखों के लिए अपेक्षाकृत अधिक का नुकसानदायक है।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रकार, ऑनलाइन शिक्षा को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है--

1. सिंक्रोनस ऑनलाइन शिक्षा इस प्रकार की ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में एक ही समय में शिक्षक और छात्रों के मध्य संबंध स्थापित होता है तथा अध्ययन की गतिविधियां प्रश्न उत्तर आज सिंक्रोनस शिक्षा व्यवस्था के उदाहरण है
2. असिंक्रोनस ऑनलाइन शिक्षा इस प्रकार की ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक पाठ्यक्रम के कंटेंट को रिकॉर्ड करके, उनका ऑडियो , वीडियो, प्रैक्टिस सामग्री तैयार, बनाकर छात्रों को उपलब्ध कराते हैं। छात्र अपनी सुविधानुसार दी गई सामग्री को पढ़ सकते हैं देख सकते हैं या सुन सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 20-20 में लगभग 30०/०पाठ्यक्रम ऑनलाइन पढ़ाया जाएगा अर्थात शिक्षा व्यवस्था परंपरागत और ऑनलाइन व्यवस्था का मिश्रित रूप होगी।

जिन विषयों में व्यवहारिक कौशल की आवश्यकता नहीं है उन विषयों को ऑनलाइन पढ़ाया जा सकता है और जिन विषयों के लिए प्रैक्टिकल स्किल की आवश्यकता होती है उन्हें ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों तरीके का मिश्रित शिक्षण चाहिए अर्थात ऑनलाइन व्यवस्था में अगर कुछ लेक्चर विशेष आवश्यकता के अनुसार परंपरागत अर्थात ऑफलाइन दिए जाते हैं तो वह मिश्रित तरीका बन जाता है।

निष्कर्ष

ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के कारण ऑनलाइन विश्वविद्यालय अस्तित्व में आएंगे जिनमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अहम भूमिका होगी और कमजोर छात्रों के लिए उनकी जरूरत के अनुसार पाठ्य सामग्री आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी ।एक प्रोफेसर एक साथ कई भाषाओं में व्याख्यान दे सकेंगे। लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एल एम एस) अस्तित्व में आने के कारण उच्च शिक्षा गुणवत्ता में सुधार आएगा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल अवधारणा साकार होगी

भविष्य के अध्ययन के लिए सुझाव

देश की अधिकांश शिक्षण संस्थानों में ऑनलाइन शिक्षण कार्य प्रारंभ कर दिया है लेकिन अभी यह व्यवस्था प्रारंभिक अवस्था में है इसे बेहतर बनाने की अनेक संभावनाएं है जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं--

ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु सुझाव

1. ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में इंटरनेट की अहम भूमिका है, भारत के अधिकांश गांव और दूरदराज के क्षेत्रों में या तो इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है और यदि है तो सिग्नल बहुत कमजोर है जिसकी वजह से ऑनलाइन शिक्षा में सर्वाधिक बाधा आती है। अतः दूरदराज की सभी गांवों तक स्ट्रांग सिग्नल के साथ इंटरनेट व्यवस्था होनी चाहिए ताकि बच्चे बिना बाधा के अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से जारी रख सकें।

2. दूरदराज के क्षेत्रों में दूसरी प्रमुख समस्या है वहां बिजली नहीं पहुंचना । बिजली के बिना कंप्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल चल नहीं सकती।अतः गांव गांव तक बिजली पहुंचाकर ही ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था को मजबूती प्रदान की जा सकती है।
3. आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चों के पास जरूरी उपकरण जैसे कंप्यूटर लैपटॉप या मोबाइल नहीं होते या परिवार में केवल एक ही होता है अतः एक से अधिक बच्चे एक साथ ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते। इस प्रकार आर्थिक रूप से कमजोर प्रत्येक बच्चे को ऑनलाइन शिक्षा के लिए जरूरी उपलब्ध कराने होंगे चाहे यह काम सरकार के द्वारा किया जाए या शिक्षण संस्थानों के द्वारा।
4. सभी शिक्षण संस्थानों, ग्राम पंचायतों, तहसील स्तरों और सामाजिक स्थानों पर ई लर्निंग पार्क / ई- लाइब्रेरी स्थापित किए जाने चाहिए ताकि छात्र सुविधा अनुसार वहां जाकर ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकें
5. सभी स्कूलों संस्थानों की लाइब्रेरी में प्रीलोडेड टेबलेट का संग्रह होना चाहिए ताकि किताबों की बात इन्हें विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जा सके।
6. प्रत्येक स्तर के शिक्षकों को उचित तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और उन्हें नए डिजिटल उपकरणों को प्रयोग में लाने हेतु गहन एवं अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वह स्तरीय ई कंटेंट तैयार कर सके और उन्हें अपने छात्रों तक पहुंचा सके।
7. सभी स्कूलों/ शिक्षण संस्थानों को इंटरनेट कनेक्शन, कंप्यूटर , स्मार्ट क्लास, प्रिंटर आदि उपलब्ध कराने होंगे ।
8. इंटरनेट पर क्षेत्रीय भाषा का कम उपयोग होता है अतः ऑनलाइन से शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ई कंटेंट क्षेत्रीय भाषा में बनाने होंगे।
9. स्कूल कॉलेज या अन्य शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत सभी छात्र छात्राओं को छात्रवृत्ति की तरह लैपटॉप, टेबलेट या स्मार्टफोन दिया जाना चाहिए ताकि संपन्न और विपन्न छात्रों के मध्य कोई खाई उत्पन्न ना हो सके।
10. ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था की सफलता इस बात पर भी निर्भर करेगी कि विद्यार्थियों के अभिभावक कितना समय देकर देते हैं क्योंकि टीचर के डायरेक्ट कांटेक्ट में नहीं है, अधिकांश बच्चे घर में रहकर ऑनलाइन पढ़ाई करते हैं अतः अभिभावकों की जागरूकता और उनका सहयोग भी आवश्यक है।

आभार

प्रस्तुत शीर्षक के अंतर्गत शोध पत्र तैयार करने का सुझाव देने के लिए लेखिका प्रोफेसर आर. पी. यादव प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर, रामपुर का आभार व्यक्त करती हूं

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *https://en.wikipedia.org/wiki/National_Policy_on_Education#1968*
2. *National Education Policy-2020*
3. *,www/http://nptel.ac.in*
4. *www.edupage.org*
5. *Procedia computer science,132 ,2018*
6. *www.researchgate.net*
7. *www.wlac.edu*
8. *International Education Journal, 5(5),2005*